P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-IV*December-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विद्यालयो में जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयास : एक समालोचनात्मक अध्ययन

मनीषा शर्मा
रीडर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय (CTE),
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य विद्यालयी शिक्षकों में 'जेण्डर संवेदनशीलता' विषयक अवधारणा की बुनियादी समझ का आकलन करना है। इस कार्य के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से कुल 120 शिक्षकों से सर्वेक्षण विधि से आंकड़ों का संग्रहण कर विश्लेषण एवं व्याख्या की गई। शोध परिणाम बताते हैं कि शिक्षकों में न केवल जेण्डर संवेदनशीलता की बुनियादी समझ का अभाव है वरन् वे जेण्डर एवं लिंग संबंधी सम्प्रत्यात्मक अंतर को समझने में भी सक्षम नहीं है। अतः इन दोनों तथ्यों को ध्यान में रखते हुए एक उपचारात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन की प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा अनुशंसा की जाती है।

मुख्य शब्द : जेण्डर संवेदनशीलता, उन्नयन, प्रयास, समालोचनात्मक

प्रस्तावना

विद्यालय समाज का ही लघु रूप होते हैं। विद्यालय में प्रवेश लेने के उपरांत ही बालक सामाजिक जीवन में प्रवेश करता है। इस प्रकार बालक को एक सामाजिक प्राणी बनाने में विद्यालयों की निर्विवाद भूमिका है। वर्तमान में हमारा समाज जेण्डर असंवेदनशीलता की गंभीर समस्या से जूझ रहा है। ऐसे में समाज का अनिवार्य एवं सक्रिय अंग होने के नाते विद्यालयों का इस समस्या से कोई सरोकार न हो, लगभग असंभव ही है।

भारतीय विद्यालयों में जो शिक्षा पद्धति प्रचलित है, उसके कई पक्षों में सुधार की व्यापक संभावनाएँ नज़र आती है, ख़ासतौर से पाठ्यक्रम को लेकर। पाठ्यक्रम जिसमें जेण्डर संवेदनशीलता की नज़र से बहुत ही रूढ़िवादी बातें सामने आती हैं। समय के पहिये के थोड़ा पीछे ले जाने पर हम पाते हैं कि बच्चों की दूसरी और तीसरी कक्षा की किताबों में छपी कविताएँ और पाठ जिनमें माँ को रसोई, पिता को अखबार पढ़ते, बेटे को क्रिकेट और बेटी को गुड़िया से खेलते दिखाया गया था। आख़िर क्यों नहीं एक आत्मनिर्भर महिला के चरित्र को कहानियों का हिस्सा बनाया जाता, क्यों नहीं रसोई और पूजाघर से बाहर महिलाओं की और भी सक्रिय भूमिका दिखाई जाती?

कहने का तात्पर्य यही है कि हमारी विद्यालयी शिक्षा जेण्डर विषयक कई पूर्वाग्रहों से ग्रस्त नज़र आती है जो लड़कियों को बहुत ही सीमित भूमिकाओ में आँकती और विकसित होते देखना चाहती है। वे अच्छी नर्स, एयर हॉस्टेस, रिसेप्शनिस्ट अथवा अध्यापिका बनेगी, यह हमारे लिए सहज स्वीकृत होता है। मगर वे एक अच्छी इंजीनियर, तकनीशियन, आर्किटेक्ट, पायलट या फौजी हो सकती हैं, यह न तो हम न ही हमारे अध्यापक बच्चों का सिखाते हैं।

उक्त बातें कदाचित् अजीब लगे किंतु ये वे सच्चाईयाँ हैं जो बचपन से शिक्षा के मार्फत बच्चों के दिमाग में एक पुरूष और एक स्त्री के आदर्शों, भूमिकाओं और व्यवहारों को तय करने में सहायक होती हैं। इन बातों की ओर न माता–पिता सोचते हैं, न ही हमारे अध्यापक–अध्यापिकाएँ। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक वर्ग इस दिशा में पहल करे। विद्यालयो में जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों की एक महती भूमिका वर्तमान समय की एक विशिष्ट माँग है जिसे पूरा करने के प्रयास अब शिक्षकों द्वारा प्रारंभ होने लग गये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र इसी संदर्भ में शिक्षकों द्वारा विभिन्न विद्यालयी स्तरों पर किये गये प्रयासों की पड़ताल करता है।

समस्या का औचित्य

जेण्डर संवेदनशीलता भले ही पाठ्यक्रम का औपचारिक हिस्सा न हो किंतु अप्रत्यक्ष रूप से यह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है। यदि शिक्षकों द्वारा कक्षा–कक्ष में जेण्डर संवदेनशील व्यवहार प्रदर्शित किया जाये तो विद्यार्थियों में इसका विकास एवं उन्नयन स्वाभाविक रूप से होता है। यही कारण है कि समय–समय पर शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे शैक्षणिक एवं गैर–शैक्षणिक, दोनों प्रकार के क्षेत्रों में जेण्डर संवेदनशील दृष्टिकोण का परिचय देवें। अतः यह जानना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि इस दिशा में शिक्षक कितने प्रयासरत हैं? प्रस्तुत शोध न केवल इन प्रयासों को हमारे सामने लाता है वरन् उनका समालोचनात्मक अध्ययन भी करता है ताकि इन प्रयासों को और दुरूस्त एवं परिष्कृत किया जा सके।

शोध प्रश्न

1. क्या शिक्षक जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु प्रयासरत हैं?
2. जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों द्वारा क्या–क्या प्रयास किये जा रहे हैं?
3. क्या शिक्षकों द्वारा किये जा रहे उक्त प्रयास पर्याप्त हैं?
4. क्या उक्त संदर्भ में शिक्षकों द्वारा किये जा रहे प्रयासों को और मजबूत बनाया जा सकता है?

समस्या अभिकथन

''विद्यालयों में जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयास : एक समालोचनात्मक अध्ययन''

उद्देश्य

1. विद्यालयों में जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले प्रयासों का पता लगाना।
2. विद्यालयों में जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले प्रयासों की समालोचनात्मक समीक्षा करना।
3. विद्यालयों में जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले प्रयासों को परिष्कृत करने संबंधी सुझाव देना।

पारिभाषिक शब्दावली

जेण्डर :–स्त्री/पुरूषों के बीच अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के बीच अन्तर की सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था।

संवेदनशीलता :–व्यवहारों, परिस्थितियों में जागरूकता।

उन्नयन :–किसी भी मूल्य अथवा विचारधारा को आगे बढ़ाना।

अध्ययन का परिसीमन

शोध अध्ययन उदयपुर जिले के सह शिक्षा वाले माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक सीमित रखा गया है।

शोध अध्ययन में उक्त विद्यालयों के वरिष्ठ अध्यापकों को ही सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श

शिक्षक	ग्रामीण	शहरी	कुल	चयन विधि
पुरूष	30	30	60	स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन
महिला	30	30	60	

उपकरण

प्रस्तुत शोध में जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों द्वारा विद्यालयों में किये जाने वाले प्रयासों के अन्वेषण हेतु एक स्वर्निमित प्रश्नावली का निर्माण किया गया।प्रयास एक ऐसा चर है जिसे मात्रा में व्यक्त नहीं किया जा सकता। इसका सिर्फ गुणात्मक विश्लेषण ही संभव है। यही कारण है कि संरचित स्वर्निमित प्रश्नावली के माध्यम से उल्लेखित संदर्भ में विद्यालयी शिक्षकों के विभिन्न प्रयासों से संबंधित गुणात्मक आँकड़े एकत्रित किये गये।

दत्त संग्रहण की प्रक्रिया

जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों द्वारा विद्यालयों में किये जाने वाले प्रयासों का जानने हेतु स्वर्निमित प्रश्नावली का प्रयोग स्वयं शोधार्थी द्वारा निर्धारित अध्ययन क्षेत्र में जाकर किया गया। शोधार्थी द्वारा प्रत्येक विषयी का साक्षात्कार लेकर संबंधित तथ्य एकत्रित किये गये।

दत्त विश्लेषण की प्रक्रिया

जैसा कि ऊपर उल्लेखित किया जा चुका है कि इस शोध में प्रयुक्त दत्तों की प्रकृति गुणात्मक है। अतएव इनका विश्लेषण भी गुणात्मक विधि से ही किया गया जिसमें विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति के माध्यम से विभिन्न प्रकार के प्रयासों को उल्लेखित किया गया।

मुख्य शोध प्राप्तियाँ –Main Research Findings

जेण्डर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षकों द्वारा विद्यालयों में किये जाने वाले प्रयासों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है–

विद्यालयी क्रियाकलापों के संदर्भ में

1. कक्षा के विभिन्न अनुभागों के निर्माण में लिंग को कारक बनाने की अपेक्षा समान संख्या में छात्र एवं छात्राओं का चयन कर सहशिक्षा को बढ़ावा।
2. छात्र संसद एवं विभिन्न समितियों में छात्र–छात्राओं को समान प्रतिनिधित्व।
3. अभिभावक सम्मेलन में विद्यार्थियों के पिताओं के अलावा माताओं की उपस्थिति भी सुनिश्चित करना।
4. समय–समय पर अलग से मातृ सम्मेलन का आयोजन।
5. विद्यालय प्रबंध समिति में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।
6. खो–खो जैसे खेलों के लिए छात्रों को एवं फुटबॉल जैसे खेलों के लिए छात्राओं को प्रेरित करना।
7. जीवन कौशल जैसे विषयों के द्वारा विद्यार्थियों को प्रकृतिजनित लैंगिक विभिन्नताओं एवं समाज जनित जेंडर विभिन्नताओं के बीच के अन्तर को समझाना।

8. छात्राओं के अनुशासन संबंधी निरीक्षण हेतु पुरूष शिक्षकों एवं छात्रों के संबंध में महिला शिक्षकों की जवाबदेही सुनिश्चित करना आदि।

शिक्षा के समान अवसरों के संदर्भ में

1. नामांकन की प्रक्रिया में छात्राओं के उचित अनुपात को ध्यान में रखते हुए प्रवेश देना।
2. यह सुनिश्चित करना जिन छात्रों के बहनें हैं वे किसी विद्यालय में नामांकित हैं अथवा नहीं।
3. प्रतिभाशाली बालिकाओं को अतिरिक्त सहायता उपलब्ध करवाना।
4. छात्रों को भी गृहविज्ञान एवं चित्रकला जैसे विषयों के प्रति प्रेरित करना।
5. गणित, विज्ञान एवं अन्य तकनीकी विषयों का चयन करने हेतु छात्राओं को विशेष रूप से प्रोत्साहित करना।
6. कक्षा में पढ़ाते समय यह सुनिश्चित करना कि जो उदाहरण अथवा दृष्टांत प्रयुक्त किये जाएँ उनमें महान् स्त्री चरित्रों जैसे झांसी की रानी, इन्दिरा गाँधी, कल्पना चावला इत्यादि को भी पर्याप्त स्थान प्राप्त हो।

रोजगार के अवसरों में समानता के संदर्भ में

1. विद्यालय की उच्चतम कक्षा अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण करने वाली प्रतिभाशाली छात्राओं को उच्च शिक्षा के लिए घर से बाहर भेजने के सम्बन्ध में अभिभावकों को राजी करना एवं इस सम्बन्ध में सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाना।
2. छात्राओं को काउंसलिंग के जरीये विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी देना ताकि वे इस सम्बन्ध में महिला प्रधान क्षेत्रों तक ही सीमित न रहें। यही नीति छात्रों के सम्बन्ध में भी अपनाना।
3. समाजोपयोगी उत्पादन कार्यों में छात्राओं के साथ–साथ छात्रों को भी बराबर भागीदार बनाना।
4. स्काउट एवं एन.सी.सी. जैसे कार्यक्रमों में छात्राओं को उचित प्रतिनिधित्व दिलवाना।
5. घर से बाहर अध्ययनरत् छात्राओं हेतु सामुदायिक सहयोग से छात्रावासों के निर्माण हेतु प्रयास।
6. विभिन्न क्षेत्रों में सफल विभिन्न महिलाओं को विद्यालय में आमंत्रित करना एवं विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करवाना।

सामाजिक मानसिकता के संदर्भ में

1. विद्यालय में समय–समय पर जेंडर संवेदनशीलता आधारित पैनल परिचर्चाओं का आयोजन किया जाना और उसमें अभिभावकों को भी दर्शक के रूप में आमंत्रित करना ताकि उनकी मानसिकता का उचित दिशा में शोधन किया जा सके।
2. अभिभावक सम्मेलनों में जेंडर विषयक मुद्दों को प्रमुखता के साथ रखना एवं इस संबंध में सुझाव संग्रहित करना।
3. विद्यालय भवन की दीवारों पर महान् स्त्री चरित्रों के चित्र एवं कथन अंकित करवाना।
4. विद्यालय की प्रशासनिक समितियों में महिला शिक्षकों को उचित प्रतिनिधित्व देना।
5. किसी भी विद्यालयी कार्य को संपादित करने हेतु महिला एवं पुरूष को एक समान योग्य समझना और इसी आधार पर उसका क्रियान्वयन की रूपरेखा तैयार करना।

समालोचनात्मक समीक्षा एवं सुझाव

इसमें कोई संदेह नहीं कि नामांकन से लेकर विभिन्न स्तरों पर शिक्षक छात्र एवं छात्राओं के अनुपात को समान करने हेतु प्रयासरत हैं। इसके कुछ अच्छे परिणाम विशेषकर नामांकन के संदर्भ में मिल भी रहे हैं। परंतु समस्या यह है कि क्या इस संदर्भ में सिर्फ मात्रात्मक समानता ही पर्याप्त है? कदापि नहीं। मात्रात्मक समानता कभी भी वास्तविक समानता का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती। अतः एक सीमा तक छात्र–छात्राओं के समान अनुपात का लक्ष्य प्राप्त कर लेने के उपरांत इस बात के प्रयास किये जाने चाहिए कि भूमिका निर्वहन में भी उन्हें पर्याप्त समानता प्राप्त हो।

1. शिक्षकों द्वारा जेंडर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु किये जा रहे विभिन्न प्रयासों की श्रंखला में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास अभिभावकों की समान भागेदारी से संबंधित है। देखा जा रहा है कि शिक्षक विद्यालयों में आयोजित विभिन्न समारोहों में माता एवं पिता, दोनों को समान रूप से भागीदार बनाने हेतु प्रयासरत हैं। सैद्धांतिक दृष्टि से यह प्रयास पर्याप्त लगता है किंतु व्यावहारिक दृष्टिकोण से देख जाये तो बिना माताओं की सक्रिय भागेदारी के यह प्रयास भी अपर्याप्त ही है। अतः इस दिशा में और ठोस प्रयासों की आवश्यकता है।
2. यह भी देखने में आ रहा है कि शिक्षक लड़कों को उन पाठ्यक्रमों एवं व्यावसायों से जुड़ने हेतु प्रेरित कर रहे हैं जिन्हें प्रचलित मान्यताओं में सिर्फ लड़कियों के लिए उपयुक्त माना जाता है। इसी प्रकार के प्रयास लड़कों के लिए भी लड़कियों के लिए मुफीद क्षेत्रों में किये जा रहे हैं। कई बार प्रेरणा जैसे आदर्शात्मक प्रयास नाकाफ़ी साबित होते है। अतः इस दिशा में ठोस पहल करते हुए विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों एवं व्यवसायों में लड़कों एवं लड़कियों, दोनों के लिए स्थान आरक्षित कर देने चाहिए। ऐसा करने से इन प्रयासों को वैधानिक आधार भी प्राप्त हो जायेगा।
3. यद्यपि प्रस्तुत शोध से यह तो स्पष्ट हुआ है कि जेंडर संवेदनशीलता के उन्नयन हेतु शिक्षक विद्यालय स्तर पर प्रयास कर रहे हैं तथापि विद्यालय के बाहर किये जा सकने प्रयासों की तरफ़ भी पर्याप्त ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। ऐसी कई शैक्षणिक योजनाएँ हैं जो जेंडर संवेदनशीलता स्थापित करने के उद्देश्य से ही बनाई गई है। अतः शिक्षकों को

चाहिए वे अपने शिक्षण कार्य में से थोड़ा समय इन योजनाओं की जानकारी विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों तक भी पहुँचाये ताकि वे इनका लाभ उठा सकें।

4. विद्यार्थी जेंडर दृष्टि से संवेदनशील बने इसके लिए शिक्षक शिक्षण के दौरान विभिन्न क्षेत्रों की प्रसिद्ध हस्तियों के उद्धरण प्रयुक्त करते हैं जो कि एक सराहनीय प्रयास है। इसे और सशक्त एवं प्रासंगिक बनाया जा सकता है, यदि उन स्थानीय उद्धरणों का प्रयोग किया जाये जिनसे विद्यार्थी भली प्रकार से परिचित हों। निःसंदेह अपने परिचित उद्धरणों का पाकर विद्यार्थियों में जेंडर के प्रति संवेदनशीलता अपेक्षाकृत शीघ्र विकसित होगी।
5. विद्यालयों में जेंडर संवेदनशीलता विषयक परिचर्चाओं की अपनी कुछ सीमाएँ होती हैं। ग्रामीण परिवेश के अभिभावकों के लिये तो इतनी प्रासंगिकता और भी कम हो जाती है। अतएव शिक्षकों को चाहिए कि वे इन परिचर्चाओं में प्रदर्शन अथवा नाटक आव्यूह का अधिकाधिक प्रयोग करें। जेंडर संवेदनशीलता विषयक नाटकों एवं एकांकी का मंचन एक सराहनीय कदम सिद्ध हो सकता है।
6. प्रस्तुत शोध में यह उल्लेखित किया जा चुका है कि हमारे वर्तमान पाठ्यक्रम में महिलाओं को एक सीमित भूमिका में देखने की परिपाटी रही है। पाठ्यक्रम किसी भी शिक्षा प्रणाली के अहम् अंग होते हैं क्योंकि इन्हीं के द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास किये जाते हैं। स्पष्ट है कि जब पाठ्यक्रम में निहीत विषयवस्तु में ही जेण्डर संवेदनशीलता का ध्यान नहीं रखा जाता हो तो अन्य किसी उपाय द्वारा इसकी स्थापना के बारे में सोचना ही व्यर्थ है। अतः सर्वप्रथम शिक्षा प्रशासकों को चाहिए कि वे पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार से करें कि प्रत्येक प्रसंग एवं पाठ्यवस्तु में जेण्डर संवेदनशीलता का विशेष ध्यान रखा जाये।
7. प्रस्तुत शोध यह तथ्य तो दृष्टिगोचर हुआ है कि शिक्षक उच्च शिक्षा हेतु छात्राओं के लिए पृथक छात्रावासों के निर्माण हेतु प्रयासरत हैं ताकि लड़कियों को सुरक्षा कारणों से घर से शिक्षा हेतु बाहर न भेजने संबंधी प्रवृत्ति को बदला जा सके। इसके बावजूद देखने में आ रहा है कि माता–पिता अपने बच्चों को विशेषतौर से लड़कियों को आज भी अध्ययन उद्देश्यों से घर से बाहर भेजने हेतु तैयार नहीं है। आज भी इस संबंध में अभिभावकों की मानसिकता में ज्यादा परिवर्तन देखने में नहीं आया है। विभिन्न कोचिंग सेन्टरो से आये दिन कोचिंग सेटरों पर अध्ययनरत् बच्चों द्वारा आत्महत्या की ख़बरे आती रहती हैं जिनसे अभिभावकों की सोच पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः मात्र् भौतिक सुविधाएँ ही लड़कियों के लिए घर से बाहर उच्च शिक्षा की गारंटी साबित नहीं हो सकती। आवश्यकता इस बात की है कि भौतिक सुविधाओं के साथ–साथ पर्याप्त शारीरिक एवं भावात्मक सुरक्षा के पुख़्ता बंदोबस्त किये जाये।
8. आमतौर पर सैद्धांतिक दृष्टि से कोई भी शिक्षक सह–शिक्षा का विरोध नहीं करता परंतु यह भी उतना ही सत्य है कि पारंपरिक सोच के चलते आज भी शिक्षकों द्वारा लड़के–लड़कियों को आपस में ज्यादा बातचीत करने से रोका जाता है। यह हमारी जेण्डर असंवेदनशीलता का सबसे जीता–जागता नमूना है जिससे हम सब बूरी तरह से ग्रसित है। इस मानसिकता को बदलने की ठोस आवश्यकता है। जब तक हम उम्र बच्चे, चाहे वे किसी भी जेण्डर के क्यूँ न हों, एक–दूसरे को समझे बिना उनके जेण्डर के प्रति भला कैसे संवेदनशील बन सकते हैं। अतः इनमें पस्पर सार्थक बातचीत को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह कार्य विद्यालयों में समूह चर्चाओं के माध्यम से शिक्षकों द्वारा प्रभावी ढंग से संपादित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bradley, H. (2007). Gender. Cambridge: Polity Press.
2. Butler, J. (1999). Gender Trouble : Feminism and the Subversion of Identity. Newyork: Routledge.
3. Bradley, H. (1984). Sex and Gender : The Devlopment of Masculinity and Femininity. London: Karnac book ltd.
4. Girvan, Marnie (2013): Thematic Study On Education And Gender Equality.
5. Jain, Geeta (2010): Gender differences in self concept among adolescent students of Uttarakhand
6. National Focus Group on Gender Issues in Education. Position Paper (3.2)
7. Reproductive Health Outlook (RHO, 2004) “Gender and Sexual Health: Overview and Lessons Learned. Available at www.path.org
8. World Bank Gender Net (2006) “Gender and Rural Development: Concepts and Issues. Available at www.worldbank.org/gender
9. डॉ. सुधा सिंह (2008). ज्ञान का स्त्रीवादी पाठ. नई दिल्ली : ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन।
10. सीमोन द बोउवार (अनुवाद–प्रभा खेतान, 2002). स्त्री उपेक्षिता. नई दिल्ली : हिन्दी पॉकेट बुक।